स्वयं के पथ की खोज

❑ विधि जैन

वर्तमान मानवीय समाज में बच्चों के सीखने के लिए विशेष प्रयत्न होना लाजमी है । जिन बच्चों को विशेष रूप से बड़ों की मदद से सीखने के अवसर नहीं मिलते वे समाज के वर्तमान ढांचे में - और यदि समाज में समझ, ज्ञान, सौंदर्य, बोध, एवं नैतिक बोध का वर्तमान स्तर भी बनाये रखना चाहें तो किसी भी नये ईजाद किये ढांचे में भी - हाशिये पर धकेल दिये जाते हैं । सीखने-सिखाने के विशेष प्रयत्नों के लिए निर्धारित स्थान, लोग, सीखने की विषयवस्तु, आदि चाहियें । यही विद्यालय है ।

पर जैसे ही विद्यालय अस्तित्व में आता है उसके संचालन में, उसके क्रियाकलापों में, विकृतियां आ जाती हैं । इन विकृतियों को दूर करने के लिए कुछ लोग अधिक सुविचारित एवं सचेत प्रयत्न करने का सुझाव देते हैं - इसी अंक में कई लेख इस दिशा में इशारा करते हैं। दूसरे लोग विद्यालय की अवधारणा पर बिना विचार किये उसके देश-काल बद्ध रूप को ही संपूर्णता मानते हुए उसे खारिज करने की सलाह देते हैं । कुछ उसे न खारिज कर पाते हैं, न उसका विश्लेषण करते हैं । केवल भिन्न शब्दावली में अपने काम का वर्णन करते हैं । इन वर्णनों में विद्यालय की आवश्यकता एवं उसकी व्यापक संकल्पना के तत्व भी मौजूद रहते हैं और इस विचार को ही खारिज करने की मानसिकता भी मौजूद रहती है । यहां ऐसे ही उपक्रम का वृत्तान्त प्रस्तुत है । इसमें शायद विद्यालय की कुछ समस्याओं के समाधान की तरफ संकेत हैं । वहीं कुछ प्रश्न भी उठते हैं । क्या ऐसी व्यवस्थायें समता एवं न्याय पर आधारित समाज के लिए बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती हैं ? क्या ये व्यवस्थायें विद्यालय की परंपरा से बने ज्ञान, ज्ञान की व्यवस्था एवं अध्ययन-विधियों पर परजीवी नहीं हैं ? क्या ये व्यवस्थायें विद्यालय की मूल संकल्पना से बाहर है ? या उसी का एक रूप है ?

इस प्रयोग पर हम पाठकों के और विशेष रूप से शिक्षकों एवं छोटे बच्चों के अभिभावकों के विचार जानना चाहेंगे । आप की टिप्पणी या प्रतिक्रिया इस सहचिंतन को आगे बढ़ाने के लिए जरूरी है ।

''हम नहीं चाहते कि हमारे बच्चों का बचपन व मासूमियत उनसे छीन ली जाये ।''

''हम नहीं चाहते कि हमारे बच्चों की प्राकृतिक सीखने की प्रक्रियाएं खत्म कर दी जायें ओर वे स्कूलों की प्रतिस्पर्धात्मक व एकांगी बनाने वाली शिक्षा पर अपना समय नष्ट करें जहां उनकी छोटी से छोटी बात पर पिटाई होती हो ।''

''हम चाहते हैं कि हमारे बच्चों की क्षमताओं, सृजनात्मकता व सपनों का विकास हो और वे अच्छे इन्सान बनें जो स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें ।''

ऐसे विचार रखने वाले अभिभावक पूरे विश्व में मौजूद हैं जो आज की फैक्ट्री स्कूली व्यवस्था से पूरी तरह हताश हैं, लेकिन अपने बच्चों के पूर्ण विकास के लिए प्रतिबद्ध व सर्तक हैं । ये अभिभावक चाहते हैं कि उनके बच्चे ऐसे खुले माहौल में सीखें व बड़े हों जहां स्कूल जैसे कठोर नियम नहीं हों और उन्हें एकरूपता में नहीं ढाला जाये । वे अपने बच्चों की विभिन्नता व स्वयं सीखने की प्रक्रियाओं को मजबूत बनाना चाहते हैं।

अमेरिका में हाल ही में मुझे 'पाथफाइन्डर सामुदायिक लर्निंग सेंटर'* जाने का अवसर प्राप्त हुआ जो मुक्त सीखने व स्वयं सीखने की प्रक्रियाओं को उजागर करता है जिनसे बच्चों में स्वराज विकसित हो सकेगा । पाथफाइन्डर सामुदायिक लर्निंग सेंटर की शुरुआत 1996 में जोश होर्निक और केन डेनफर्ड नामक दो शिक्षकों ने एमहर्स्ट, मेसाचुसेटस नामक एक शहर में की । वे दोनों शिक्षक होकर भी स्कूली व्यवस्था से बहुत परेशान और असन्तुष्ट थे क्योंकि उनके अनुभवों से स्कूली व्यवस्था बच्चों के जोश, सृजनशक्ति, जिज्ञासाओं व आत्म विश्वास को पहचानने में बिलकुल असमर्थ

हैं। उन्होंने स्कूल सुधार के काफी प्रयास भी किये लेकिन वे असफल रहे । उनको स्वयं के अनुभवों से यह बात अच्छी खासी समझ में आ गई कि चाहे स्कूली व्यवस्था में कितना ही पैसा व संसाधन डाल दें, उसमें कुछ भी फर्क नही पड़ सकता क्योंकि इसका मूल आधार अनिवार्यता द्वारा बच्चों पर अप्रासंगिक सामग्री थोपना व पदवीकरण को बढ़ावा देना है जिसे कोई बदल नहीं सकता। उन्हें यह विश्वास हो गया कि समुदाय से जुड़े हुए कुछ नये सीखने के स्थानों व वातावरणों की आवश्यकता है जिसकी उन्होंने साथ मिलकर पहल की। उनके मुख्य प्रेरणा स्रोत अमेरिका में 1970 से अब तक चल रहे अनस्कूलिंग आन्दोलन हैं । वे इसी आन्दोलन को विभिन्न तरीकों से बढ़ावा देने व नये जोश से मजबूत बनाने में प्रयासरत हैं।

डेनफर्ड के अनुसार पाथफाइन्डर मुख्य रूप से चार प्रकार के लोगों को आकर्षित करता है । इसमें शामिल हैं स्वतन्त्र रूप से सोचने वाले नागरिक; अपने बच्चों को विमुक्त शिक्षा प्रदान करने में इच्छुक अभिभावक, बच्चे और तरुण जो स्कूल में घुटन महसूस करते हैं और जिन्होंने स्कूल नहीं जाने का निर्णय लिया हुआ है ।

चाहे स्कूली व्यवस्था में कितना ही पैसा व संसाधन डाल दें, उसमें कुछ भी फर्क नही पड़ सकता क्योंकि इसका मूल आधार अनिवार्यता द्वारा बच्चों पर अप्रासंगिक सामग्री थोपना व पदवीकरण को बढ़ावा देना है जिसे कोई बदल नहीं सकता। उन्हें यह विश्वास हो गया कि समुदाय से जुड़े हुए कुछ नये सीखने के स्थानों व वातावरणों की आवश्यकता है जिसकी उन्होंने साथ मिलकर पहल की। उनके मुख्य प्रेरणा स्रोत अमेरिका में 1970 से अब तक चल रहे अनस्कूलिंग आन्दोलन हैं ।

पाथफाइन्डर में अब तक कुल मिलाकर करीब 100 तरुणों ने अलग-अलग रूप से सहयोग प्राप्त किया है । पाथफाइन्डर में ज्यादातर निम्न-मध्यम और मध्यमवर्गीय परिवारों के तरुण जुड़ते हैं। यह कोई सामान्य स्कूल या वैकल्पिक स्कूल नहीं है । यहां दण्ड, पुरस्कार, सर्टिफिकेट जैसे स्कूली व्यवहारों का कोई स्थान नहीं है । तरुण बिना किसी जोर जबरदस्ती से अपनी मर्जी व रुचि के अनुसार इसमें भाग लेते हैं । पाथफाइन्डर में कोई बना-बनाया पाठ्यक्रम नहीं है और वे इसके सख्त खिलाफ हैं । उन्हें जो सीखना व समझना है वे उसका चयन करके उस पर ही ध्यान देते हैं । वहां पर कुल मिलाकर चार प्राध्यापक हैं, बाकी वहां पर उस क्षेत्र के लोग आकर स्वयंसेवी रूप में रुचि के अनुसार तरुणों व अभिभावकों को मदद प्रदान करते हैं ।

पाथफाइन्डर का लक्ष्य केवल तरुण ही नहीं बल्कि अभिभावकों व समुदायों को भी अलग-अलग तरह से सहयोग प्रदान करना है । पाथफाइन्डर मुख्यत: चार तरह की गतिविधियों के द्वारा सहयोग प्रदान करते हैं -

1. वहां से जुड़े अभिभावकों व बच्चों के साथ अर्थपूर्ण गतिविधियों का रुचि के अनुसार चयन करना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है । पाथफाइन्डर अभिभावकों की निरन्तर चलने वाली भूमिका व रिश्तों को खास अहमियत प्रदान करते हैं । आज स्कूलों व टीवी के कारण बच्चों का अभिभावकों से रिश्ता कमजोर होता जा रहा है। पाथफाइन्डर का मानना है कि जब तक अभिभावक व बच्चे एक-दूसरे को ठीक से समझेंगे नहीं, एक दूसरे का आदर नहीं करेंगे व एक दूसरे के साथ सीखने की कोशिश नहीं करेंगे तो उनका रिश्ता व व्यवहार भी बहुत सतही व शिक्षक समान ही रहेगा । इसके लिये वे बच्चों व अभिभावकों के साथ कई तरह के मिले-जुले कार्यक्रमों का निर्धारण करते हैं । ऐसे अभिभावकों के कई उदाहरण हैं जिन्होंने अपने बच्चों के साथ पाथफाइन्डर की सीखने की गतिविधियों में पूरा भाग लिया है एवं उन्होंने स्वयं को भी अलग दृष्टि से देखना शुरू किया। उदाहरण के तौर पर पाथफाइन्डर से निकले 19 वर्षीय स्टीव की मां ने बताया, ''वहां पर बिताए दो वर्षों में स्टीव ने जीवन जीने के कई महत्वपूर्ण आयाम सीखे, कुम्हारी सीखी । साथ ही उसने वैश्वीकरण से तीसरे विश्व के देशों के लोगों पर हो रहे दुष्प्रभावों को भी जाना। उसी के साथ सीखते-सीखते मैं भी स्वयं को एक कार्यकर्ता के रूप में देखने लगी हूं ।'' पाथफाइन्डर बच्चों के जीवन के उद्देश्यों को बच्चों व अभिभावकों के साथ मिलकर उजागर करने में सहयोग प्रदान करता है। बच्चों के लिये आधे साल के लिये उपयुक्त गतिविधियों व अभिभावकों की भूमिका को भी मिलकर तय किया जाता है। इस तरह की अनस्कूलिंग प्रक्रिया के लिए कानूनी कार्यवाही को पूरा करवाने में भी पाथफाइन्डर मदद करता है । इसी के अन्तर्गत दूसरे अनस्कूलित परिवारों से संपर्क व रिश्ता कायम करवाना आवश्यक माना जाता है क्योंकि इसके द्वारा वे आपस में अपने अनुभवों, ताकतों व चुनौतियों से सीख सकते हैं। पाथफाइन्डर

बच्चों व अभिभावकों के प्राकृतिक भ्रमणों व अलग अलग स्थानों पर सैर को खास अहमियत प्रदान करता है क्योंकि इससे रिश्तों के साथ-साथ आत्म विश्वास भी बढ़ता है ।

2. दूसरे प्रकार के सहयोग की गतिविधियों में पूरे सत्र के लिए रुचि व लगन के अनुसार कार्यक्रमों व गतिविधियों का निर्धारण किया जाता है । इसमें कुछ सीखने की परियोजनाओं का चयन (जो विभिन्न विषयों जैसे अमेरिका का इतिहास, रासायनिक विश्लेषण तथा लिंग अध्ययन तक विस्तृत है) शामिल है जिससे बच्चों का विश्लेषण, शोध व सोच विकसित होने में मदद मिलती है । साथ ही बहुत-सी कला-संगीत व नाट्य-गतिविधियों पर भी बल दिया जाता है, जिनसे उनमें सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास होता है। वहां पर तर्क, मैटाकाग्निशन (खुद की सोच पर अपनी समझ विकसित करना) जैसे विषयों पर भी सत्र आयोजित किये जाते हैं जो स्कूली पाठयक्रम से बहुत अलग होते हैं । वहां से दो साल पहले निकले रूडॉल्फ का कहना है : ''वहां पर आयोजित कार्यशालाओं की वजह से आज मैं अपने विचारों व सोच पर समय समय पर चिन्तन करता हूं। पाथफाइन्डर में रहकर मैंने दूसरे की बात को ध्यानपूर्वक व आदरपूर्वक सुनने की एक बहुत महत्वपूर्ण कला सीखी है ।''

पाथफाइन्डर को एक सामुदायिक स्थान के रूप में भी देखा जा सकता है । वहां पर सुचारू रूप से वहीं से निकले युवा मिलने–जुलने, शतरंज खेलने, संगीत सुनने, अच्छी वीडियो फिल्में देखने व आनन्ददायक गतिविधियों के लिए आते हैं । साथ ही वे दूसरे अभिभावकों को उनके बच्चों के कार्यक्रमों को निर्धारित करने में मदद करते हैं और वहां आ रहे बच्चों के साथ विभिन्न गतिविधियां करते हैं ।

3. वे तरुणों और बच्चों के सीखने के कार्यक्रमों में समय समय पर आवश्यकता अनुसार फेरबदल करते हैं एवं उनकी प्रगति का समय समय पर पुन: निरीक्षण व मूल्यांकन करते हैं । यह प्रक्रिया स्कूली व्यवस्था से बहुत अलग है । यहां पर बच्चों की प्रगति की एक दूसरे से तुलना नहीं की जाती है। वे बच्चों में विकसित हो रही समूह-भावना, स्वानुशासन व आत्मविश्वास जैसे मापदण्डों को ज्यादा महत्व देते हैं । इसके अन्तर्गत वहां पर कार्य कर रहे अध्यापकों का मूल्यांकन भी समय-समय पर किया जाता है जिसमें वे भी अपने सीखने की गतिविधियों व अलग-अलग पीढ़ियों के बीच सीखने की प्रक्रियाओं पर चिन्तन करते हैं । एक विशेषता यह है कि वहां के बच्चे व युवा भी अपने अध्यापकों का मूल्यांकन करते हैं व उन्हें उनके व्यवहार पर सुझाव प्रदान करते हैं । केन का मानना है कि, ''वे अपने आपको शिक्षक नहीं पर बच्चों के साथ सीखने वाले सहयोगी के रूप में देखने लगे हैं एवं वे भी बच्चों को आदर प्रदान करना सीख गये हैं, जो स्कूलों और कालेजों में नहीं होता है ।''

4. समुदाय से जुड़ाव की गतिविधियों को पाथफाइन्डर बहुत महत्व देते हैं । यह केन्द्र खासकर तरुणों में उनके समुदाय के प्रति आत्मीय-रिश्ता व मौलिक जिम्मेदारी पैदा करने के लिए प्रयासरत है । वे उनके लिए इन्टर्नशिप का आयोजन करते हैं । वे विभिन्न प्रकार के कारखानों, दफ्तरों, व्यवसायों पर युवाओं को उनकी रुचि के अनुसार भेजते हैं ताकि वे वहीं पर रहकर सीख सकें । वे व्यावहरिक ज्ञान यानि वास्तविक परिप्रेक्ष्य व जीवन से जुड़ी स्थितियों में रहकर सीखने पर ज्यादा बल देते हैं, जैसे खेती का काम खेत पर ही रहकर पूर्ण रूप से सीखा जा सकता है । साथ ही तरूणों को उन प्रेरणादायक लोगों से जोड़ते हैं जो उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक हों । वे विभिन्न उम्र के युवाओं से रिश्ता कायम करवाने में मदद करते हैं ताकि युवा पीढ़ी के लिए सकारात्मक रॉल मॉडल या आदर्श बन सकें । इसके पीछे भी उनका मानना है कि समुदाय में मौजूद ज्ञान, विवेक, संस्कृति व अनुभवों से युवा बहुत कुछ सीख सकते हैं और उसे आगे बढ़ाने में भी मदद कर सकते हैं । यह तभी संभव है जब स्वयं के समुदाय के लिए उनके मन में आदर व प्रेम की भावना होगी, जो आज की एकलखोरी बनाने वाली स्कूली व्यवस्था में असंभव है ।

पाथफाइन्डर से निकलकर 16-17 वर्ष के युवा अपने पैरों पर खड़े हो रहे हैं । कुछ कालेजों में दाखिला लेते हैं, कुछ ऐप्रेन्टीशिप (किसी दुकान या कार्यस्थान पर जाकर सीखना) करते हैं या रुचिनुसार काम शुरू करते हैं । जोश के हिसाब से ''पाथफाइन्डर का एक मुख्य उद्देश्य ऐसे उत्साही युवाओं को तैयार करना है जो कॉलेज, कार्यस्थल व समुदाय में नयी तरह की भूमिकाओं को निभाएं । वे तहेदिल से आज की व्यवस्था को समझने की कोशिश करें व उसका अन्धानुकरण किये बिना उसे

समय-समय पर चुनौती भी प्रदान करें । वहां पर युवा अलग-अलग तरह के नेतृत्व व जोखिम मोल लेने की क्षमताओं को विकसित करते हैं । जिससे वे स्वयं की पहल से कार्य शुरू कर सकते हैं । उदाहरण के तौर पर रेफ एनजोविन (18 वर्ष) ने कहा, ''मैंने अपने पिता के साथ एनजोविन स्टुडियो खोला है। मैं 8 से 10 घंटे इसी स्टुडियों में अन्य 5 विद्यार्थियों के साथ बिताता हूं । मेरा कॉलेज जाने का कोई विचार नहीं बन पाया है। मैं काफी अच्छी फिल्में भी देखता हूं और अपने स्टुडियो के संदर्भ में इलेक्ट्रोनिक अध्ययन भी करता हूं ।'' पाथफाइन्डर से निकले हुए एलिन मोर्फ (16 वर्ष) ने बताया, ''मैं ह्यूमन इकोलोजी में बी.ए. करने का विचार कर रहा हूं । मुझे कुछ अंदाज है कि मैं जीवन में कहां जा रहा हूं जो कि मैं हाई स्कूल में नहीं जान सकता था, वहां तो मैं केवल पदवी व अंकों पर ही परेशान होता रहता। मैं कहानियां व कविताएं लिखता हूं क्योंकि नये विचार व नयी कल्पनायें मेरे मन में आती रहती हैं । मैं इन विचारों व कल्पनाओं का आदर करता हूं और मुझे यह महसूस होता है कि मैं उन्हें कागज पर उतारूं ।''

सबसे ज्यादा खुशी की बात है कि यहां के सभी तरूणों के मन में कुछ नया करने के सपने एवं आत्मविश्वास है । स्वप्रेरित सीखने के परिणामों से ये तरुण अपनी भिन्नताओं को विस्तृत करने व बढ़ाने के प्रयास कर रहे हैं जिनमें उन्हें गर्व महसूस होता है। यहां पर आने के बाद युवाओं ने स्वयं में आत्मनियंत्रण को भी विकसित किया है और अब वे उपभोक्तावाद से हटकर प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने को ज्यादा महत्व प्रदान करते है ।

पाथफाइन्डर को एक सामुदायिक स्थान के रूप में भी देखा जा सकता है । वहां पर सुचारू रूप से वहीं से निकले युवा मिलने-जुलने, शतरंज खेलने, संगीत सुनने, अच्छी वीडियो फिल्में देखने व आनन्ददायक गतिविधियों के लिए आते हैं । साथ ही वे दूसरे अभिभावकों को उनके बच्चों के कार्यक्रमों को निर्धारित करने में मदद करते हैं और वहां आ रहे बच्चों के साथ विभिन्न गतिविधियां करते हैं ।

पाथफाइन्डर एक मासिक पत्र भी निकालते हैं जिसे वे 'लिबरेटेड लर्नर्स' कहते हैं । हर अंक में वहां के तरुण-वहां आने वाले, वहां से निकले हुए एवं उनके अभिभावक स्वयं के सामुदायिक सीखने के अनुभवों का लेखों, कविताओं, गीतों, चित्रों आदि के रूप में वर्णन करते हैं । इसके द्वारा युवाओं व सीखने के बारे में विभिन्न नये आयाम सामने आते हैं । इसमें बच्चे व तरुण अपने स्वयं के जीवन के उद्देश्यों व दृष्टियों का भी वर्णन करते हैं जो कि दूसरे लोगों के लिए बहुत ही प्रेरणादायक बन सकते हैं ।

पाथफाइन्डर की कार्यप्रणाली और उद्देश्य को विस्तार से समझने के दौरान मुझे अपने में प्रसन्नता और स्फूर्ति की अनुभूति हो रही थी । बार-बार मुझे अहसास होता कि ''पाथफाइन्डर'' को मैं पहले से जानती हूं । एक संबंध मेरे अन्तर्मन में उजागर हुआ जिसे देखकर मुझे समझ में आया कि ऐसा मुझे क्यों लग रहा है । पाथफाइन्डर प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपनी जीवन दृष्टि के विकास और खोज की निरन्तर प्रक्रिया है और यह सदैव से ही हमारे खून में विद्यमान रही है । हमारी परम्परा व संस्कृति में अपनी क्षमताओं और योग्यताओं को पहचानने एवं उसके आधार पर जीवन की वास्तविकताओं को समझकर सार्थक जीवन-यात्रा के पथ को खोजते हुए निर्भय आगे बढ़ते रहने के लिये बहुत स्थान हैं । इसमें स्वयं के आन्तरिक प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए व प्रकृति से गहराई से समन्वय स्थापित करके जीने पर बल दिया जाता है । हमारी जीवन-शैली भू-मण्डल पर प्रत्येक के अस्तित्व के लिए उत्तरदायी है । हम इस सनातन जीवन दृष्टि से विचलित अवश्य हो गये हैं । मेरे ख्याल से पाथफाइण्डर इसी जीवन दर्शन को जीने और उसके लिए वातावरण बनाने का प्रयास कर रहा है। इस संकट काल में यह सकारात्मक, साहसिक अनुकरणीय कदम है । हमारे यहां इसके लिए स्थान, संभावनाएं व आध्यात्मिक आधार अनुकूल है। सिर्फ जरूरत है पिछली कुछ सदियों के दुष्प्रभावों को समझ कर उससे मुक्त होने और अपनी वास्तविक विरासत को पहचान कर उस पर पहल करने की । उसमें पाथफाइन्डर की नकल किये बिना आवश्यकता के अनुसार कुछ नये सीखने के विमुक्त स्थानों व माहौलों की सर्जना करनी होगी क्योंकि ऐसे ही कुछ कदम हमें स्वराज की ओर अग्रसर करेंगे ।

हमारे लिए कुछ विचारणीय बिन्दु हैं :-

1. पाथफाइन्डर लर्निंग सेन्टर से हम क्या सीख सकते हैं ?
2. आपके अनुसार 21 वीं सदी में हमारे बच्चों को कौनसे गुण सीखने की आवश्यकता है ? ये कैसे विकसित हो सकते हैं ?
3. 21 वीं सदी में हमारे बच्चों के सामने क्या-क्या चुनौतियां हैं ?
4. पाथफाइन्डर जैसे माहौल विकसित करने के लिए हमें क्या-क्या करना होगा ? किन-किन लोगों की भागीदारी की आवश्यकता होगी ? ◆

---

* इस आंदोलन पर अधिक जानकारी के लिए होल्ट एसोसियेट की 'ग्रोइंग विद्आउट स्कूलिंग' नामक पत्रिका देखें। इनका बेवसाइट www. holtgws. com भी देख सकते हैं ।